International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

'भाति मे भारतम्' काव्य में अलंकार–योजना

प्रस्तोत्री

बिनता दास

शोधार्थी

सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान

शोध पर्यवेक्षक

डा0 सुमित कुमार शर्मा

सहायक प्रोफेसर

सिंघानिया विश्वविद्यालय, बड़ी पचेरी

सार:

1. **अनुप्रास अलंकार** :– काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने 'वर्णों की समानता को अनुप्रास अलंकार कहा है । उनके मतानुसार स्वरों के असमान होने पर भी व्यंजनों की समानता तथा रस–भावादि के अनुकूल व्यंजनों की अत्यन्त व्यवधान रहित चमत्कारजनक प्रकृष्ट योजना ही अनुप्रास है।

साहित्यकार विश्वनाथ के अनुसार 'स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद पदांश के साम्य को अनुप्रास कहते हैं ।

उदाहरण :–

मानवामानितं दानवाबाधितं
निर्जराराधितं सज्जनासाधितम् ।
पण्डितैः पूजितं पक्षिभिः कूजितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में 'म', 'न', 'त', 'न', 'ध' वर्ण की पुनः आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार परिलक्षित होता है।

अन्य उदाहरण :–

मन्दिरैर्मस्जिदैश्चैत्यगिर्जागृहै –
रार्यगेहैर्गुरूद्वारकै र्भ्राजितम् ।
कर्मभूः शर्मभूर्धर्मभूर्मर्मभूः
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में 'म', 'भ', 'त', 'र' वर्ण की पुनः आवृत्ति हुई है। अतः अनुप्रास अलंकार परिलक्षित होता है।

वक्रोक्ति अलंकार –

(वक्ता के द्वारा) किसी अभिप्राय से कहा गया वाक्य यदि अन्य व्यक्ति (श्रोता) के द्वारा श्लेष या काकुरूप ध्वनि विकार के हेतु से अन्य अर्थ में कल्पित कर लिया जाता है तो वह 'वक्रोक्ति (नामक) अलंकार है, जो उस प्रकार से दो तरह का है

1. (श्लेष से) श्लेष वक्रोक्ति
2. (काकु से) काकु वक्रोक्ति

उदाहरणः–

क्रुद्धहिंसाबले क्वास्त्यहिंसाजयः ?
कुत्र मुच्येत बद्धश्च मामन्तराः?
प्रश्नमित्थं जगत्सम्मुखे स्थापयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में काकु वक्रोक्ति अलंकार है । कवि का आश्य है कि क्रुद्ध हिंसा के बल पर अहिंसा की जय एवं बद्ध जीव और कहाँ मुक्ति प्राप्त कर सकता है अर्थात् (गले की ध्वनि से) भारत में ही कर सकता है। इस प्रकार भारत के स्वरूप में क्व शब्द परिणत किया गया है। अतः यहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार परिलक्षित होता है ।

उपमा अलंकार :–

आचार्य मम्मट के अनुसार (उपमान तथा उपमेय का) भेद होने पर गुण, क्रिया, जाति, धर्म की समानता का वर्णन उपमा अलंकार है।

विश्वनाथ के अनुसार एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित सादृश्य को उपमा कहते हैं ।

उदाहरण :–

यत्र देशान्तरं प्रस्थिते वल्लभे
ऊर्मिलेव व्यथापूरिता भामिनी ।
विप्रलम्भाम्बुधि सश्रमं पारयेत्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।

स्वभावोक्ति अलंकार :–

आचार्य मम्मट के अनुसार जहाँ बालक आदि (पदार्थों) की स्वाश्रित क्रिया तथा रूप आदि का वर्णन किया जाता है, वहां स्वभावोक्ति अलंकार होता है ।

विश्वनाथ के अनुसार दुरूह अर्थात् कविमात्र से ज्ञातव्य बच्चे आदिकों की चेष्टाएँ या स्वरूप के वर्णन को स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :–

यत्र मन्दाकिनी पापसंहारिणी
यत्र गोदावरी चारूसंचारिणी।
देवावाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में मन्दाकिनी तथा गोदावरी में विद्यमान गुणों का स्वाभाविक वर्णन किया गया है । अतः यहाँ स्वभावोक्ति अलंकार है ।

रूपक अलंकार :–

जो उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप (आरोपित या कल्पित अभेद) है, वह रूपक अलंकार कहलाता है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार निरप०व अर्थात् निषेधरहित विषय (उपमेय) में रूपित (अप०व भेद उपमान) के आरोप को रूपक अलंकार कहते हैं । जहाँ भेदरहित उपमान का उपमेय में आरोप हो, परन्तु उपमेय के स्वरूप का निषेधक कोई शब्द न हो वहाँ रूपक होता है।

उदाहरण :–

श्यामलानोकहश्रीसमृद्धान्तर
पद्मनेत्रैस्सरोभिस्समालोकितम् ।
निर्झरैः श्वेतफेनैस्समृद्धा चलं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत उदाहरण में 'कमलरूपी नेत्रों' में कमल (उपमेय) भारत (उपमान) दोनों में अत्यन्त साम्य के निमित्त से अभेद की कल्पना की गई है । अतः यहाँ रूपक अलंकार परिलक्षित होता है ।

दृष्टान्त अलंकार :–

आचार्य मम्मट के अनुसार जहाँ (वाक्यद्वय में 'वाक्यद्वये' इत्यनुवर्तते) इन सब (साधारण धर्म आदि) का बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव होता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है।

उदाहरण :–

घर्घरस्वानपूर्व पुरः प्रस्थितान्
शत्रुटैंकान् करीन्द्रानिव ध्वंसयन् ।
श्रीहमीदो बभौ केसरी यत्रतद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम ।।

प्रस्तुत पद्य में करीन्द्रों की चिंघाड़ को सिंह द्वारा ध्वस्त किए जाने के अनुरू केसरी का स्वरूप धारण करने वाले श्री हमीद द्वारा टैंक रूपी करीन्द्रों के घर्घर शब्द को ध्वस्त करने रूप साधारण धर्म का बिम्ब–प्रतिबिम्बभाव दृष्टिगत हो रहा है । अस्तु दृष्टान्त अलंकार है ।

दीपक अलंकार :–

दीपक अलंकार वह है जहाँ (क) उपमेय (प्रकृत) और उपमान (अप्रकृत) रूप वस्तुओं के (क्रियादिरूप) धर्म का एक बार ग्रहण (सकृद् वृत्तिः) किया जाता है या (ख) बहुत सी क्रियाओं के होने पर किसी कारक का एक बार ग्रहण किया जाता है ।

उदाहरण :–

रोगजालं चिकित्सालयस्थापनै –
–रौषधोत्पादनैः शल्यशोधैस्तथा
नूतनाभिश्चिकित्साभिरून्मूलयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में चिकित्सालयस्थापन, ओषधोत्पादन, शल्यशोध आदि वस्तुओं के धर्म का एक एक बार ग्रहण तथा एक ही 'भाति' क्रिया में अनेक कारक रूपों का ग्रहण होने से दीपक अलंकार है ।

विभावना अलंकार :–

आचार्य मम्मट के अनुसार जहाँ कारण (क्रिया–कारण) का प्रतिपेध होने पर भी (उसके कार्यरूप) फल (उत्पत्ति) का कथन किया जाता है । अर्थात् हेतुरूप क्रिया का निषेध होन पर भी उसके फल अर्थात् कार्य का प्रकाशन करना विभावना है।

उदाहरण :–

रक्तपातं विना शस्त्रपातं विना

यत्र संक्रान्तिरायाति मन्दस्मिता ।
येन विश्वं सदा शिक्ष्यते प्रेर्यते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में कारण (रक्तपात, शस्त्र पात) के अभाव में भी कार्यरूप क्रान्ति का वर्णन किया गया है । अतः यहाँ विभावना अलंकार परिलक्षित होता है ।

विशेषोक्ति अलंकार :–

विशेषोक्ति वह अलंकार है जहाँ (प्रसिद्ध) कारणों के मिलने पर भी कार्य का कथन नहीं किया जाता वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है। अर्थात् कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना – विशेषोक्ति है ।

उदाहरण :–

वेशभूषाशनोपासनापद्धति
क्रीडनामोदसंस्कारवृत्त्यादिषु ।
यद्धि भिन्नं सदप्यस्त्यभिन्नं सदा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत पद्य में परिधान, भोजन, उपासना पद्धति, क्रीड़ा तथा मनोरंजनादि में भिन्नता होते हुए भी समस्त देश को अभिन्न अभिहित करने के कारण विशेषोक्ति अलंकार है ।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

अग्निपुराण	महर्षि वेदव्यास	बलदेव उपाध्याय, चैखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1966
अभिज्ञानशाकुन्तलम	कालिदास	पदमश्री डॉ° कपिलदेव द्विवेदी, आचार्य(प्रणेता)
आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य	चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1965
उज्ज्वलनीलमणि	रूपगोस्वामी	महामहोपाध्याय पण्डित दुर्गा प्रसाद शर्मा (व्याख्या), चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 1985
काव्यमीमांसा	राजशेखर	डॉ° रमाशंकर त्रिपाठी (संपा°)मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1973
काव्यादर्श	दण्डी	प्रो° योगेश्वरदŸा शर्मा (संपा°) नाग पब्लिशर्स, 11ए/यू.ए., जवाहर नगर, दिल्ली, 1999

काव्यानुशासन	हेमचन्द	महामहोपाध्याय पं° शिवदÿा व काशीनाथ पांडुरंगा परब(संपा°) मेहरचंद लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1986
काव्यालंकार	भामह	प्रो° देवेन्द्रनाथ शर्मा (संपा°)बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, विक्रम संवत् 2019
काव्यालंकार	रुद्रट	श्री रामदेव शुक्ल (संपा°) चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1
काव्यालंकारसूत्र	वामन	डाॅ° बेचन झा (संपा°) चैखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1971
छन्दःसूत्रम	संस्कृत भाष्यकार श्रीमदाखिलानन्द शर्मा कविरत्नम्	गुरूकुल वृंदावन स्नातक-शोध संस्थानान्तर्गत आचार्य धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री प्राच्य-विद्यापीठ, 74, तरूण एन्कलेव, नई दिल्ली ।